18

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में राजभाषा के बढ़ते चरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अभिवृद्धि हो रही है । संस्थान का समस्त प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में और यथा आवश्यक द्विभाषी रूप में ही हो रहा है ।

संस्थान के शोध कार्यों से संबंधित "शोध उपलब्धियाँ 2002-2004" का प्रकाशन हुआ जिसका विमोचन दिनांक 02 जुलाई, 2005 को संस्थान के वार्षिक दिवस समारोह के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक एवं कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. मंगला राय के कर-कमलों द्वारा हुआ ।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं । उनमें लिए गए निर्णयों पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए हर तिमाही में पहले से ही संस्थान में गठित राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा निरीक्षण किया गया । इस समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन पर निगरानी रखी जाती है । स्थिति के अनुसार समिति द्वारा अपने सुझाव एवं सिफ़ारिशें निदेशक महोदय के समक्ष प्रस्तुत की गईं तथा निदेशक महोदय द्वारा दिये गये आदेशों को विभिन्न प्रभागों/अनुभागों में प्रचारित किया गया ।

हिन्दी चेतनामास के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के लिए मुख्य अतिथि से पुरस्कार ग्रहण करते हुए विद्यार्थी

प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान संस्थान के कर्मियों के लिए चार कार्यशालाएँ आयोजित की गईं । इनमें से एक प्रशिक्षण कार्यशाला "आई.एस.एम.-2000 सॉफ्टवेयर" पर, दो कार्यशालाएँ "हिन्दी प्रगति रिपोर्ट के प्रपत्र भरने" के संबंध में तथा एक कार्यशाला "कार्यालय-प्रक्रिया एवं आँकड़ों का रखरखाव" पर आयोजित की गईं ।

संस्थान में कार्यरत सभी हिन्दी-भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा हिन्दी ज्ञान संबंधी प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है । आज तक की स्थिति के अनुसार, संस्थान में अब कोई ऐसा हिन्दी भाषी अधिकारी/ कर्मचारी शेष नहीं रह गया है जिसे हिन्दी ज्ञान संबंधी

"आई.एस.एम.-2000 सॉफ्टवेयर" पर आयोजित की गई प्रशिक्षण कार्यशाला का एक दृश्य

प्रशिक्षण दिया जाना शेष हो । इसके अलावा, हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत संस्थान में हिन्दी आशुलिपि एवं हिन्दी टंकण के प्रशिक्षण का लक्ष्य भी संस्थान द्वारा पूरा कर लिया गया है ।

संस्थान में वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से लिखे जाने वाले सभी पत्र तो हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में लिखे ही गये साथ ही, "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्रों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में दिए गए । "क" तथा "ख" क्षेत्रों की राज्य सरकारों एवं उनके कार्यालयों और गैर-सरकारी व्यक्तियों के साथ पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा अपेक्षानुसार द्विभाषी रूप में ही किया गया । संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों द्वारा आयोजित की जाने वाली बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में जारी किए गए ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिये सात अनुभागों को विनिर्दिष्ट करने का लक्ष्य संस्थान द्वारा पहले ही से प्राप्त कर लिया गया है । हमारे संस्थान में अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिये दस अनुभाग पहले से ही विनिर्दिष्ट हैं ।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपने शोध-पत्र, परियोजना-प्रस्ताव तथा सेमिनार हिन्दी में भी प्रस्तुत किए । वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों के सारांश भी द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किए गए ।

"कार्यालय-प्रक्रिया एवं आँकड़ों का रखरखाव" पर आयोजित की गई प्रशिक्षण कार्यशाला का एक दृश्य

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी तथा परिचालित विभिन्न नकद पुरस्कार योजनाएँ संस्थान में लागू हैं । संस्थान के कर्मियों ने इन योजनाओं में हिस्सा लिया ।

इस वर्ष से संस्थान द्वारा एक हिन्दी पत्रिका, "सांख्यिकी-विमर्श" का प्रकाशन आरम्भ किया गया है । इस प्रवेशांक में संस्थान के इतिहास, संस्थान के कीर्ति-स्तम्भ, संस्थान द्वारा किए गए अनुसंधानों एवं अन्य कार्यों का संक्षिप्त विवरण, संस्थान में राजभाषा से संबंधित कार्यों इत्यादि के अतिरिक्त कृषि-सांख्यिकी एवं कृषि में संगणक अनुप्रयोग से संबंधित विभिन्न लेख व शोध-पत्र संग्रहित हैं ।

संस्थान में दिनांक 01 से 30 सितम्बर, 2005 के दौरान हिन्दी चेतनामास मनाया गया । इस दौरान अनेक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं जैसे - काव्य पाठ, शिक्षक दिवस, डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान, शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता (हिन्दी में), प्रश्न मंच, वाद-विवाद, हिन्दी आशुलिपि, हिन्दी टंकण इत्यादि ।

इस वर्ष से हिन्दी चेतनामास के कार्यक्रमों में "शिक्षक दिवस" को भी जोड़ा गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं संस्थान के पूर्व निदेशक, प्रो. प्रेम नारायण को सम्मानित किया गया ।

संस्थान में हर वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह

हिन्दी चेतनामास के दौरान निदेशक महोदय मुख्य अतिथि
एवं संस्थान के पूर्व निदेशक, प्रो. प्रेम नारायण का सम्मान करते हुए

स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यह वैज्ञानिक व्याख्यान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय प्रोफ़ेसर, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा "पर्याप्त संतुलित उर्वरक तथा कार्बनिक खादों का समेकित उपयोग: बढ़ती खाद्यान्न माँग की आपूर्ति का एकमात्र सहारा" विषय पर दिया गया । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय प्रोफ़ेसर, प्रो. अनुपम वर्मा, इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे ।

दिनांक 23 सितम्बर, 2005 को संस्थान के वैज्ञानिकों/ तकनीकी कर्मियों/ छात्रों के लिए शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें वैज्ञानिकों/ तकनीकी कर्मियों द्वारा 13 पोस्टर लगाए गए । बाहर से आमंत्रित निर्णायकों द्वारा तीन श्रेष्ठ शोध-पत्र-पोस्टरों का चयन किया गया । हिन्दी चेतनामास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/ कार्यक्रमों के सफल प्रतियोगियों को समापन समारोह की मुख्य अतिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की वित्तीय सलाहकार डॉ. रीता शर्मा, के कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया । मुख्य अतिथि ने संस्थान में हिन्दी की प्रगति की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

ANNUAL REPORT 2006
IASRI